और बानी कई भांत की, कह समझावत सब साथ ।
साथ अब कोई धाम में, पकड़ बैठाए हाथ ॥७८॥

और बाकी सब परमधाम का वर्णन करके आप धाम धनी श्री प्राणनाथ जी हर प्रकार से समझाते हैं। इस समय सुनने वाले सुन्दरसाथ को ऐसा अनुभव होता है जैसे परमधाम में ही घूम रहे हैं ।

ए लीला केती कहों, रात होत पहर दोए।
कोई समें तीन जात है, चरचा कहि समझावे सोए ॥७९॥

परमधाम की लीला का वर्णन कहां तक किया जा सकता है ? इस वर्णन को करते-करते एक पहर समय अर्थात् दो पहर रात ९ से १२ बजे तक बीत जाती है और कई बार तीन पहर रात्रि के बीत जाते हैं अर्थात प्रातः काल के तीन बज जाते हैं आप धाम धनी श्री प्राणनाथ जी इस रसमयी चर्चा में मग्न होकर मोमिनों को समझाते हैं ।

श्री राज पौढ़े पलंग पर, गादी तकिए उठावें ये।
बिहारी दास संग नाथा रहे, और साथी सामिल सेवा के ॥८०॥

अब चर्चा समाप्त होने के बाद धाम धनी इस तख्त से उठकर पौढ़ने के लिए पलंग पर आते हैं तो बिहारी दास के साथ नाथा और कई सुन्दरसाथ पौढ़ने की सेज्या लगाने की सेवा में शामिल होते हैं ।

महामत कहें ए सैंयनों, ए छटे पहर की बीतक ।
अब कहों पहर सातमां, जैसी सोहोबत हक ॥८१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं, हे सुन्दरसाथ जी ! यह छठे पहर अर्थात् ९ से १२ बजे तक के समय में जो मोमिनों ने सुख लिया, उसका वर्णन किया है । अब सातमें पहर में जिस प्रकार मोमिनों ने सुख लिया, उसका वर्णन करते हैं ।

(प्रकरण ६९, चौपाई ४१८६)

सातमा पहर

अब रात पहर दो गई, पोहोर चार दिन दो रात ।
उपरान्त पोहोर सातमा, कहों ताकी विख्यात ॥१॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं - हे सुन्दरसाथ जी ! अब रात के दो पहर और दिन के चार पहर व्यतीत हुए अर्थात् रात के १२ से ३ बजे तक का जो सातवां पहर होता है उसमें मोमिनों (ब्रह्मसृष्टियों) ने किस प्रकार अपने धाम धनी को रिझाने के लिए सेवा की, उस वृत्तान्त को कहते हैं । सुनो ।

Nijanand App

इन समें सेज समारत, नारायन द्वारका दास ।
गंगादास परमानन्द, और सेज समारत खास ॥२॥

इस समय नारायण, द्वारका दास, गंगादास और परमानन्द श्री जी के पौढ़ने की सेज को संवारते हैं।

इत साज समारत, ए जो दोए पलंग के ।
एक पर बैठें एक कोतल, सोभा कही न जाए ते ॥३॥

इस समय दो पलंगों की सेज्या सजाई जाती है । एक पर आप श्री जी और दूसरे पर बाई जू राज पौढ़ते हैं । इस शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता ।

चार पाए अत सुन्दर, नूर भरे अत प्यार ।
इस उपले नूर के, ताको क्योंकर कहों बिहार ॥४॥

श्री जी के पलंग के चारों पाए लाल रंग के अति प्यारे शोभायमान हैं । उसके ऊपर की सजावट की शोभा का वर्णन नहीं हो सकता ।

पचरंगी पाटी भरी, अत नरम सुखदाए ।
तापर तलाई सोभित, तापर चादर बिछाए ॥५॥

पांच रंगों की पाटी (निवाड़) से पलंग बुना हुआ है, जो अति नर्म और सुखदाई है । उस पर रेशमी तलाई (गद्दा) शोभित है और उस पर चद्दर बिछी है ।

अत सुन्दर सेज बन्ध, जुगतें बांधे चारों पाए ।
पांचों रंग रेसमी झलकत, सुन्दरता सुख दाए ॥६॥

और चद्दर के चारों किनारे पायों के साथ बड़ी युक्ति से बांधे जाते हैं । रेशमी चद्दर के पांचों रंग झलकते हैं, जो अति सुन्दर और प्यारे लगते हैं ।

सिराने गाल मसुरिए, कहां लों कहूं बनाए ।
चारों डांडे नूर के, ऊपर छत्री गिरदवाए ॥७॥

सेज्या पर सिरहाने और गोल तकिये इस प्रकार शोभायमान हैं कि उसका कहां तक वर्णन किया जाए। चारों पायों पर चार लाल रंग के डांडे लगे हैं, जिनको घेर कर चारों तरफ छत्री आई है ।

झालर झलके नूर की, ऊपर छत्री घेर ।
ए जो सोभा सेज की, क्यों कर कहों इन बेर ॥८॥

छत्री को घेर कर चारों तरफ झालर लगी है । इस प्रकार, इस वक्त की सेज्या का वर्णन कहां तक किया जा सकता है ।

Nijanand App

सेज बिछाई सनेह सों, फेरत ऊपर हाथ।
जिन तिनका कोई रहे, बिसंभर सेवे इन साथ ॥९॥

इतने प्यार से सेज्या बिछाने के बाद भी बिशम्भर भाई फिर ऊपर हाथ फेरते हैं कि कहीं कोई तिनका ना रह जाए।

आए आगे अरज करी, सेवे बल्लभ दास।
घड़ी घड़ी पोहोर पोहोर, सुनावें धाम लीला खास ॥१०॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी परमधाम के पच्चीस पक्षों की अखंड लीला के पल-पल का और पहर-पहर का वर्णन सुनाने में मग्न हैं, तब वल्लभदास आकर पौढ़ने की अर्ज करता हैं।

आनके अरज करी, घड़ी पहुंची आए।
धाम धनी याद कीजिए, समया पहुंचा धाए ॥११॥

"हे धनी! कृपया चर्चा बन्द कीजिए। अब पौढ़ने का समय हो गया है।" गंगादास ने आकर अर्ज की। आप श्री जी फुरमाते हैं सुन्दरसाथ जी पौढ़ने के समय श्री राज जी महाराज को याद कीजिए।

अरज करे सेज की, गंगादास इन काम।
समें भया पौढ़न का, राज पधारो इस काम ॥१२॥

फिर गंगादास जी ने अर्ज की कि हे धाम धनी! पौढ़ने का समय हो गया है। कृपया आप सेज्या पर पधारिए।

चरचा में चित रहे, स्वाद धाम बरनन।
सब श्रवना देत सनेह सों, खास गिरोह सैयन ॥१३॥

आप धाम के धनी परमधाम के इस रस को सुन्दरसाथ को पिलाने में मग्न हैं और सब सुन्दरसाथ भी एकाग्रचित्त होकर चर्चा सुन रहे हैं। मोमिन ब्रह्मसृष्टियों को समय की सुध ही नहीं हैं। वह भी आनन्द विभोर हो रहे हैं।

सवाल करे कोई बीच में, ताको दे उत्तर।
फेर चरचा तिन पर होत है, रस घटे न क्यों ए कर ॥१४॥

यदि कोई सुन्दरसाथ कुछ पूछने के लिए प्रश्न करते हैं तो आप श्री जी उसके प्रश्न पर चर्चा करते हैं पर चर्चा के रस में कोई कमी नहीं होती।

Nijanand App

इन समें कोई आयत, लालदास ल्यावत।
फेर सुने चित देय के, पौढ़ने की अरज करत ॥१५॥

और इस समय यदि लालदास जी कोई कुरान की आयत लेकर आते हैं उस को भी आप श्री जी चित्त देकर सुनते हैं, फिर इसी पर चर्चा करते हैं और सब सुन्दरसाथ सुनते हैं। इतने में फिर पौढ़ने की अर्ज की जाती है।

जेनती इत आए के, बीच में करें अरज।
बातें गिरोह की सुनी होए, ताको उतारें फरज ॥१६॥

अब जयन्ती काका के पास जो सुन्दरसाथ ने अपनी कुछ बातें कही होती हैं, वह बातें इस समय श्री जी को आकर करते हैं और इस प्रकार अपना फर्ज पूरा करते हैं।

गोकुलदास इत आए के, ल्यावत हदीसें।
केसवदास पढ़त हैं, हदीसां इन समे ॥१७॥

गोकुलदास इस समय कुरान की हदीसों को लेकर आते हैं और केशवदास इन हदीसों को पढ़ते हैं। आप धाम के धनी हदीसों को सुनकर सब सुन्दरसाथ के सामने उनके छिपे भेदों को खोल कर बताते हैं।

साथी सब सेवन के, रहे गिरदवाए घेर।
फेर फेर अरज होत है, अब बहुत हुई है बेर ॥१८॥

उधर सेवा करने वाले सुंदरसाथ सेज्या के चारों तरफ घेर कर खड़े हैं और बार-बार विनती करते हैं कि आज तो बहुत देर हो गई। कृपया चर्चा बन्द कीजिए।

साथ सबे इन्तजार खड़े, श्री जी आप करें झेर।
चरचा के सुख वास्ते, सब मोंगे रहे फेर ॥१९॥

उधर सेवा करने वाले सब सुन्दरसाथ सेज्या को घेरकर खड़े हैं पर श्री जी स्वयं ही इतने रस में मग्न हैं कि देर कर देते हैं और सुन्दरसाथ भी रसमयी चर्चा होने के कारण से चुप रह जाते हैं।

यों करते आधी पर, घड़ी दोए चार बितीत।
फेर के अरज होत है, कहें उठत हैं ल्याओ परतीत ॥२०॥

इस प्रकार करते-करते सातवें पहर में भी घंटा-डेढ़ घंटा ऊपर बीत जाता है तो सुन्दरसाथ फिर पौढ़ने की अर्ज करते हैं तो श्री जी आप उत्तर देते है - ''उठते हैं। चिन्ता मत करो।''

Nijanand App

जब महाराजा होवहीं, देवें चरचा में श्रवन।
कोई न बोलें इन समें, साथ चरचा के आधीन ॥२१॥

जब महाराजा छत्रसाल जी होते हैं तो वह भी एकाग्रचित्त हो कर चर्चा सुनने बैठते हैं। चर्चा ऐसे बेशक इलम की होती हैं जिसमें किसी को किसी प्रकार का भी संशय नहीं रह जाता। इसलिए कोई भी सुन्दरसाथ इस समय बोलता नहीं है।

श्री बाई जी इत बैठत, करत इसारत साथ।
बेर भई अबेर, क्यो ना छोड़ो किताब हाथ ॥२२॥

फिर श्री बाई जू राज जी जो चर्चा में बैठे होते हैं, वह सुन्दरसाथ को इशारे से कहते हैं कि बहुत देर हो गई है, अब कोई भी सुन्दरसाथ प्रश्न नही करेगा। किताबें बन्द करो।

श्री राजें देखा साथ सामनें, हुए उठने को तैयार।
तब सरूप बरनन धाम का, दिखाया परवरदिगार ॥२३॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी ने देखा कि जब सुन्दरसाथ ही अब चर्चा बन्द करवाना चाहते हैं तो उठने को तैयार होते हैं, तो फिर उठते समय श्री राजश्यामा जी युगल सरूप का श्रृंगार वर्णन करके सुन्दरसाथ को सुनाते हैं।

तुम सुरत राखो धाम में, श्री राज पौढ़ने की ठौर।
इन समें अपने सरूप को, याद ल्याओ न और ॥२४॥

और कहा कि हे सुन्दरसाथ जी ! तुम रंग परवाली मंदिर जहां श्री राजश्यामा जी के पौढ़ने का स्थान है, उस सेज्या के उत्तर की तरफ उनके चरण कमलों में ही अपना ध्यान लगाओ और किसी तरफ भी अपना ध्यान इस समय मत लगाओ।

सरूप बरनन सनेह सों, करत साथ पर प्यार।
इन समें को सुख क्यों कहूं, जो करते थे मनुहार ॥२५॥

युगल सरूप श्री राज जी महाराज के स्वरूप श्रृंगार का वर्णन बहुत ही प्यार स्नेह से कर आप श्री जी सुन्दरसाथ पर अपना प्यार दर्शाते हैं। किस प्रकार आप श्री जी रसमयी रसीली रसना से वर्णन कर सुन्दरसाथ को सुख पहुंचाते हैं, उस सुख आनन्द का वर्णन कैसे किया जाए।

इत वल्लभ अरज करत हैं, श्री धाम धनी की वृत।
संझा से आधी लग, कहता कोमल चित ॥२६॥

अब वल्लभदास आकर श्री धाम धनी जी की वृत्त अर्थात् मध्य रात्रि का स्वरूप जिसमें संध्या से लेकर रंग परवाली मंदिर के शयन तक का वर्णन आता है, बड़े प्यार भरे हृदय के साथ वर्णन करता हैं।

Nijanand App

श्री राज उठत इन समें, पधारत घर मानक ।
हाथ पकड़ उठावत, गंगादास बुजरक ॥२७॥

तब आप श्री जी साहिब तख्त से उठते हैं । उठ कर मानिक भाई के घर जाते हैं । इस समय गंगादास जी हाथ पकड़ कर उठाते हैं ।

एक तरफ लालदास, यातो लच्छीदास ।
या हाजिर होवे मकरन्द, पकड़ ग्रहत दिल उलास ॥२८॥

एक तरफ लालदास जी या लच्छीदास जी हाथ पकड़ने की सेवा करते हैं या फिर मकरन्द दास जी दिल में बहुत चाहना लेकर हाथ पकड़ने की सेवा करते हैं ।

पांवड़े बिछावन होत हैं, हाजिर रहे हिम्मत ।
लटके मटके चलत, मीठी बातां बीच करत ॥२९॥

चरण कमलों में पांवडे बिछाने की सेवा में हिम्मत हाजिर रहती है । आप पिऊ प्यारे बड़ी मन को लुभाने वाली चाल से चलते हैं और चलते समय प्यार भरी बातें भी करते हैं ।

पहुंचावे मानक के मकरन्द, बैठावत बाई गौर ।
मानक बातें करत हैं, लिए हुज्जत चित मरोर ॥३०॥

इस प्रकार, मानिक भाई के घर तक पहुंचाने की सेवा मकरन्द भाई करते हैं और वहां गौर बाई हाथ पकड़ कर बिठाने की सेवा करती हैं । तब मानिक भाई बहुत ही निसबत का दावा लेकर प्यार भरी बातें करता है ।

हंसते उत्तर देत हैं, कई न्याय चुकावें इत ।
फेर इंहा से उठ चले, आए सेज पौढ़ने बखत ॥३१॥

आप उनकी बातों को सुनकर हंसते हुए उत्तर देते हैं और इस समय कई सुन्दरसाथ का न्याय भी करते हैं और फिर वहां से उठ कर बंगला जी में पौढ़ने के लिए जाते हैं ।

आय बिराजे सेज पर, साथ सब किया प्रणाम ।
आप अपने आसन गए, पहिले उठी सब आम ॥३२॥

वहां से आकर सेज्या पर विराजमान हुए । तब सब सुन्दरसाथ ने श्री जी के चरणों में प्रणाम किया और अपने-अपने पौढ़ने के आसन पर गए । सबसे पहले जीवसृष्टि सुन्दरसाथ उठकर सोने के लिए भागते हैं ।

Nijanand App

इत गोदावरी आवत, ले आई कटोरी में तेल ।
चोटी छोरें बातां करें, राज भला दिखाया हमें खेल ॥३३॥

अब इस समय गोदावरी कटोरी में तेल लेकर आती हैं और धीरे-धीरे श्री जी के सिर में मालिश करती हैं और प्यार से कहती हैं "वाह राजजी महाराज ! वाह ! अच्छा आपने खेल दिखाया । आपने तो हमें दुख दिखाने को कहा था पर यहां तो उल्टा आप ही दुःख उठा रहे हो ।"

बातें श्री बाई जी की, घर की जो बीतक ।
श्री राज श्रवना देत है, ए बातें बुजरक ॥३४॥

"आपने सुन्दरसाथ के लिए एक पल में फूलबाई जी को छोड़ा और उन्होंने पुनः आपके चरणों में समर्पित होने के लिए कितने दुःख उठाकर शरीर को त्यागा और आपके चरणों में तेज कुंवरि का तन धारण कर समर्पित हुए" आप श्री जी बड़े प्यार से इन महत्वपूर्ण बातों को सुनते हैं ।

अंगारे अंगीठी भर के, ल्यावत बिहारी दास ।
थाली में अंगारे धर के, फेरत मानक खास ॥३५॥

अब बिहारी दास अंगीठी भर कर ले आता है । इस समय पौढ़ने से पहले थाली में अंगारे भर कर मानिक भाई सेज्या पर फेरता है ।

सेज तपावें भली भांत सों, रजाइयां और चादर ।
कनढपी गोटा हाजिर करें, पहिनावत ऊपर ॥३६॥

सेज्या को अच्छी तरह से गर्म करने के लिए यह सेवा की जाती है । चरण कमलों में रजाई और चादर रखी जाती है और सिर पर कनढ़पी (टोपी) गोटा पहनाया जाता है ।

मुरलीधर बिदा भए, उठे गिरोह के लोक ।
चरचा आहार अघाय के, भाग गए सब सोक ॥३७॥

अब मुरलीधर उठे और सब सुन्दरसाथ भी उठते हैं । अखंड परमधाम की वृत की चर्चा सुनने के बाद सब तृप्त हो गए जिससे मन में किसी प्रकार का भी माया का दुःख नहीं रह जाता ।

श्री राज पौढ़ें पलंग पर, सबको कही प्रणाम ।
गावन वाली आइयां, अढ़ाई पहर गई जाम ॥३८॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी सेज्या पर पौढ़ते समय सब सुन्दरसाथ को प्रणाम करते हैं । इस समय अपने धाम धनी को गाकर रिझाने वाले सुन्दरसाथ रात्रि के डेढ़ बजे हाजिर होते हैं ।

Nijanand App

बदले राग अलापत, साखियां लगा कहनें।
सब संगी सुर पूरत, लगे मीठी श्रवने ॥३९॥

सबसे पहले शेखबदल आकर इश्क भरी गज़लों को आकर सुनाते हैं। उसकी मण्डली के साथी ऐसी सुरीली मन को लुभाने वाली आवाज से गज़ल दोहराते हैं कि सुनने वाला उस रस में मग्न हो जाता है।

श्री राज चित दे सुनत हैं, बड़ी खुसाली कर।
इन समय साथी खिजमत के, आए अपनी खिजमत पर ॥४०॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी बहुत प्रसन्न होकर गज़ल को सुनते है। सब सेवा करने वाले सुन्दरसाथ अपनी-अपनी सेवा में हाजिर खड़े हैं।

चौकी सेज्या की बैठत, हंसे और साहमन।
केसवदास दौलत, और हजूरी सैयन ॥४१॥

सेज्या सजाने वाले सुन्दरसाथ भी वहां पर बैठते हैं। जिनमें हंसे, शाहमन, केशवदास, दौलतखां आदि कई सुन्दरसाथ होते हैं।

और बानी सुनन को, कोई कोई साथी बैठत।
मानक लगते सेज के, तलाई पटई उन बखत ॥४२॥

और भी कई सुन्दरसाथ शेखबदल की गज़लों को सुनने के लिए कहते हैं। इस समय मणिक भाई बाई जू राज की सेज्या के लिए गद्दा भेजता है।

लगते बिछौने बाई जी के, होत सिराने तरफ।
और घेर बिछौने सैयन के, और कोई दम ना मारे हरफ ॥४३॥

श्री बाई जू राज का बिछौना श्री जी के पलंग के सिराहने की तरफ लगाया जाता है और भी बंगला जी में घेरकर कई सुन्दरसाथ के आसन बिछाए जाते हैं पर इस समय कोई भी सुन्दरसाथ कुछ भी बोलता नहीं है।

और मोमिन भर बंगले, कोई बैठत कोई सोवत।
मुरलीधर और जेंनतीदास, बैठे चरचा को इत ॥४४॥

और बंगला जी में सब मोमिन कोई बैठे हैं, कोई लेट रहे हैं। तब मुरलीधर और जयन्ती दास दोनों श्री जी के मुखारबिन्द की सुनी हुई चर्चा को दोहराने के लिए बैठते हैं।

Nijanand App

कोठरी काके की, आगे मिलावा होत सैयन ।
तहां कुरान हदीसां बांचत, लाल केसव मोमिन ॥४५॥

जयंती काका की कोठरी के सामने ही सुंदरसाथ फिर इकट्ठे हो जाते हैं । वहां लालदास और केशवदास बैठ कर कुरान की आयतों को पढ़ते हैं ।

गोकुल दास बैठत, और मोदी बूलचन्द ।
और केतिक बाइयां बैठत, और सदा बैठे सदानन्द ॥४६॥

गोकुलदास, मोदी, बूलचंद और कई सुन्दरसाथ और भी बैठते हैं पर सदानंद तो नित्य ही बैठते हैं।

इत बड़ा मिलावा होत है, कबूं बानी कबूं चरचाए ।
कबहुं किताबें कई तरह, यों आहार रूह खिलाए ॥४७॥

इस बैठक में बहुत सुन्दरसाथ बैठते हैं । कभी वाणी पढ़ी जाती है और कभी श्री जी की सुनाई चर्चा को दोहराया जाता है । कभी अन्य ग्रन्थों पर भी चर्चा होती है । इस प्रकार, मोमिन बैठकर अपनी आतम को खुराक देते हैं ।

श्री राज उत्तर देत हैं, बैठे कौन इन बखत ।
संकर बुधसेन बल्लभ, नाम साथ के बतावत ॥४८॥

आप श्री जी पौढ़े हुए पूछते हैं - ''इस समय कौन-कौन सुन्दरसाथ बैठकर चर्चा कर रहे हैं'' तो शंकर, बुधसेन और बल्लभ खड़े होकर उन सुन्दरसाथ के नाम बताते हैं जो चर्चा में बैठे होते हैं ।

कबूं दस कबूं बीस, तीस चालीस पचास ।
कबूं साठ सत्तर असी, ए धाम धनी की आस ॥४९॥

इस बैठक में कभी १०, कभी २०, कभी ३०-४०-५० भी और कभी ६०-७०-८० या अधिक भी श्री राज जी महाराज की वाणी का रस पान करने के लिए बैठते हैं ।

आखर को सौ बैठत, कबूं ऊपर भी होए ।
भर एक अलंग बंगले, बैठत हैं सब सोए ॥५०॥

और फिर आखिर को सौ या सौ से भी अधिक बंगला जी के सामने मजलिस (सभा) के रूप में बैठ जाते हैं ।

Nijanand App

कोई कोई नेष्टा बन्ध, चूकत नाहीं सोए ।
कोई कबहुं आवे कबहुं नहीं, ए चरचा सब मिल होए ॥५१॥

इनमें कई सुन्दरसाथ तो नेष्टाबन्ध आते हैं और इस समय की चर्चा सुनने से नहीं चूकते और कोई कभी-कभी आते हैं, कभी नहीं भी आते (यह चर्चा सुन्दरसाथ आपस में मिलकर करते हैं) ।

ए चरचा सो करे, जो सुनी होय श्री राज ।
तिन चरचा को अरचत, श्री राज रिझावन काज ॥५२॥

इस समय वही चर्चा होती है जो श्री जी के मुख से सुनी होती है । उसी चर्चा को आपस में सुनाकर अपने धनी को रिझाते हैं ।

मिलावा बैठत सैयन का, रीझ राज भेजत हार ।
कबूं कलंगी बकसत, ऐसी करें मनुहार ॥५३॥

और इतनी रात बीत जाने पर भी सुन्दरसाथ को चर्चा में लट-पट, आनन्द विभोर देख कर आप श्री जी प्रसन्न होकर अपने फूलों के हार प्रशादी रूप में भेजते हैं और कभी फूलों की कलंगी भेजकर सुन्दरसाथ की मनोकामना पूर्ण करते हैं ।

उठ मुरलीधर लेत हैं, श्री राज की बकसीस ।
बांट देत सब साथ को, फेर फेर नवावें सीस ॥५४॥

मुरलीधर उठकर श्री जी की बख्शीश को झोली आगे कर ले लेते हैं । बार-बार श्री जी के चरणों में प्रणाम करते हैं और फिर श्री जी की दी हुई बख्शीश रूपी हार के फूलों को सुन्दरसाथ में बांट देते हैं ।

गोकुल केसव दौलत, कबहुंक लालदास ।
जो चरचा इत होत है, सो सुनावन की आस ॥५५॥

इस समय जो चर्चा सुनाने की सेवा होती है, वह गोकुल, केशव, दौलत और कभी लालदास जी इस सेवा को करने की चाहना से आते हैं ।

राज सों बातां करन को, हरखत है मन मांह ।
श्री राज राजी होत है, सुन विवेक इनको मुस्कायें ॥५६॥

अपने धाम धनी से बातें करने के लिए मन में बड़ी चाहना है । आप श्री जी मोमिनों की इस प्रकार विवेकशील बुद्धि के द्वारा की हुई चर्चा को सुनकर बहुत प्रसन्न होते हैं ।

Nijanand App

इत कई भांत बिहार की, बातां होए विवेक ।
सो मेरी इन जुबां केती कहों, न आवे रसना एक ॥५७॥

इस समय कई प्रकार की आनन्द लीलाओं का वर्णन होता है । उस समय के आनन्द के एक शब्द का भी वर्णन करना बहुत कठिन है ।

महामत कहे ए मोमिनों, ए सातवें पहर की बीतक ।
अब कहों पहर आठमा, ताकी सुनो सिफत ॥५८॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! यह सातवें पहर (रात्रि के बारह बजे से प्रातः तीन बजे तक के समय) की सुन्दरसाथ की सेवा का वर्णन किया है । अब आठवें पहर प्रातः ३ बजे से सूर्योदय होने तक के ६ बजे इन तीन घंटों की सेवा को कहता हूं । सुनो ।

(प्रकरण ७०, चौपाई ४२४४)

आठमा पहर

अब कहों पोहोर आठमा, श्री राज पौढें पलंग पर ।
बानी धाम धनीय की, गरजत सब ऊपर ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दरसाथ जी ! अब आठवां पहर जब आप श्री जी पलंग पर पौढ़े हैं और उधर सब मोमिन वाणी की चर्चा कर रहे हैं ।

बारी वाले गावत, फिरती चौकी पर ।
जिनकी आवे सो गावहीं, रसना मीठी कर ॥२॥

गाने वाले सुन्दरसाथ अपनी-अपनी बारी पर अपनी-अपनी मण्डली को लेकर आते हैं और जिस मण्डली की बारी होती है, वह एक से एक बढ़कर ही मीठी सुरीली आवाजो से गाकर धनी को रिझाते हैं ।

बानी धाम धनीय की, ए चौदे तबक हैयात ।
पहिचान भई न काहू को, रूह पिये हैयाती हो जात ॥३॥

अखंड परमधाम और श्री राजजी महाराज की वाणी गाई जाती है । जिस वाणी से ही इस चौदह लोक के ब्रह्मांड को अखंड होना है । वाणी की गर्जना तो हो रही है पर जीवसृष्टि में से किसी को भी पहचान नहीं होती । परमधाम की रूहें इस वाणी को सुनने पर ही अखंड सुख को प्राप्त करती हैं ।

Nijanand App